

## भारत से प्रतिभा पलायन



---

जवान और किसान किसी भी देश के दो पैर होते हैं। इन्हीं के सहारे देश खड़ा होता है परंतु इन पैरों को नियंत्रित करने का काम जिस बुद्धि का होता है उसे प्रौद्योगिकी कहते हैं। प्रौद्योगिकी की जिम्मेदारी होती है देश के वैज्ञानिकों और इंजिनियर के कंधों पर। दुनिया को सबसे अधिक वैज्ञानिक और इंजिनियर भारत देता है लेकिन फिर भी भारत तकनीकी रूप से यूरोप और अमरीका से पिछड़ा हुआ है! कारण, हमारे देश के इंजिनियर और वैज्ञानिक सुनहरे भविष्य की आशा के लिए बाहर जा कर अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करते हैं। इसी को कहते हैं 'Brain Drain'। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: [https://docs.google.com/file/d/0B8n\\_36gK-KF4R0dVNjRjYzA0VFk/edit?usp=sharing](https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4R0dVNjRjYzA0VFk/edit?usp=sharing)

भाई राजीव दीक्षित जी के जीवन में एक घटना हुई थी जिसने उनकी सोच को एक नया आयाम दिया! एक दिन वे अपने एक शोध के सिलसिले में एम्स्टर्डम, हॉलैंड गए। जब उनकी शोध पत्र को पढ़ने की बारी आई तो एक डच वैज्ञानिक खड़ा हुआ और उसने भाई राजीव जी से पूछा कि उनकी राष्ट्रीय भाषा क्या है। राजीव जी ने उत्तर दिया कि उनकी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है तो इस पर वह वैज्ञानिक बोला कि आप अपना शोध पत्र हिन्दी में क्यों नहीं पढ़ते! भाई राजीव जी ने उत्तर दिया कि अंग्रेज़ी में इसीलिए पढ़ा गया है ताकि सबकी समझ में आ सके। डच वैज्ञानिक बोला कि राजीव भाई सबके समझने या न समझ पाने की चिंता क्यों करते हैं! उनसे पहले जापान, फ्रांस और अन्य देशों के वैज्ञानिक अपनी अपनी भाषा में शोध पत्र पढ़ कर गए थे। अगर वे अपनी मातृभाषा में पढ़ सकते थे तो भाई राजीव क्यों नहीं? सभा के बाद उस वैज्ञानिक ने भाई राजीव जी को कहा कि अगर उनका जन्म 1947 से पहले हुआ होता और फिर वे अंग्रेज़ी में शोध पत्र पढ़ते तो बात समझ में आती परंतु अभी तो उनका देश स्वतंत्र है और उसकी अपनी एक भाषा है, फिर वे अपनी राष्ट्रीय भाषा में क्यों नहीं पढ़ते! राजीव जी को लगा यह बात भाषा की बाद में है पहले अपने देश के सम्मान की है! उसी दिन से उन्होंने प्रण किया कि वे हमेशा सबसे पहला स्थान अपनी मातृभाषा को देंगे!

द्वितीय विश्व युद्ध में सबसे अधिक नुकसान फ्रांस, जापान, जर्मनी, स्पेन आदि देशों का क्रमशः हुआ। इस नुकसान के बाद इन सभी देशों के लिए अपने देश को दोबारा खड़ा करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी जिनमें अमरीका भी शामिल था। देश को प्रत्येक क्षेत्र में खड़ा करने के लिए बुद्धिजीवियों का देश में रहना परमावश्यक होता है। इसी की सुरक्षा के लिए उन्होंने कुछ कानून बनाये। उदाहरण के लिए जापान ने एक कानून बनाया कि यदि कोई व्यक्ति जापान से बाहर जा कर उच्च शिक्षा हासिल करना चाहता है तो उसे वापिस आकर जापान में अपनी सेवाएँ देनी ही पड़ेंगी। इसी तरह अमरीका में एक कानून हुआ करता

था जिसमें अब थोड़ी सी ढील बरत दी गई है और वह था कि यदि कोई व्यक्ति अमरीका से बाहर उच्च शिक्षा हासिल करने या काम धंधे के लिए जाएगा जिसका संबंध उच्च बुद्धि की सेवाओं से है, तो उसे पहले अपने देश की सेना में सेवाएँ देनी पड़ेंगी! मध्य यूरोप में भी 1980 में ऐसा ही एक कानून बना जिसमें बाहर जाने से पहले व्यक्ति को अपने देश में राष्ट्रीय स्तर की सेवाएँ देनी पड़ती हैं।

बहुत कम लोगों को यह बात मालूम है कि अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन अपने युवा जीवन में, यूरोप जाकर शिक्षा हासिल करना चाहते थे। उन्होंने इसके लिए कई बार कोशिश की लेकिन हर बार उनका सामना अमरीका के उसी कानून से हुआ जो कहता है कि पहले अपने देश की सेवा करो, फिर बाहर जाओ! इसी कारण उन्हें वियतनाम के युद्ध में हिस्सा लेना पड़ा। इसी तरह उनके राष्ट्रपति काल में एक बार इलिनोइस के महाविद्यालय में विद्यार्थियों ने विरोध जताया कि उन्हें बाहर यूरोप जाकर पढ़ने का मौका नहीं दिया जा रहा है तो बिल क्लिंटन ने अपने अनुभव का दृष्टान्त देकर उनसे कहा कि उन्हें भी पहले अपने देश की सेवा करनी पड़ेगी तभी वे बाहर जा सकते हैं।

भारत में IIT की स्थापना एक बड़े मकसद से की गई है। मकसद यह था कि इन विद्यालयों के माध्यम से भारत के बुद्धिजीवी अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद बाहर की ओर तार्कें! जब देश आज़ाद हुआ तो दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए भारत में कई इंजीनियरिंग कॉलेजों की स्थापना की गई। इन कॉलेजों की स्थापना के लिए भारत के पास पर्याप्त धन नहीं था। उस समय में भारत को अपमानजनक शर्तों पर धन मुहैया कराने का काम अमरीका करता था। अमरीका की दी हुई आर्थिक मदद से भारत में विश्व के सबसे बहतरीन कॉलेजों में से एक, IIT खुले। IIT का पाठ्यक्रम कुछ इस तरह से बनाया गया है कि पढ़ाई के बाद भारत में ही कार्य करने के लिए व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ेगा! उससे आसान रास्ता यह होता है कि व्यक्ति GATE (Graduate Aptitude Test in Engineering) की परीक्षा देकर बाहर चला जाए। 80% पाठ्यक्रम भारत के किसी काम का नहीं होता क्योंकि वह अमरीका

और यूरोप के देशों में होने वाले औद्योगीकरण के अनुकूल हैं। यही कारण है कि हमारा देश मौलिक अनुसन्धान में बहुत पीछे है! इन कॉलेजों से पढ़कर निकले हुए बच्चे, जो भारत में ही रहने का फैसला करते हैं, वो संघर्ष का रास्ता चुनते हैं क्योंकि भारत में इस समय बड़े तकनीकी क्षेत्रों में तकनीक बाहर से आयात होती है। कुछ ही ऐसे प्रोजेक्ट हैं जहाँ शून्य से काम शुरू हुआ है परंतु वहाँ बहुत हिम्मत और धैर्य चाहिए!

इन सब कारणों के अलावा अमरीका का डॉलर भारत के रुपये से 60 गुणा महंगा है! यही वजह है कि हमारे देश का एक इंजिनियर या वैज्ञानिक थोड़े अधिक पैसों के लालच में बाहर चला जाता है और उसके दिमाग का पूरा फायदा उठाता है कोई दूसरा देश! जवाहर लाल नेहरू ने इस स्राव को रोकने के लिए कई बार कोशिश की। उन्होंने जितनी बार इस विषय में कानून बनाने की कोशिश की ताकि भारत का उच्चकोटि का दिमाग बाहर न जा सके, तब तब बाहर से धमकी मिली कि अगर ऐसा कोई कानून लागू हुआ तो IIT को मिलने वाली आर्थिक सहायता बंद कर दी जाएगी! वो दिन था और आज का दिन है, साहस की इस कमी की वजह से आज देश को प्रतिवर्ष 20-25 बिलियन डॉलर का नुकसान हो रहा है, इस 'Brain Drain' की वजह से!

आज दुनिया में सबसे अधिक इंजीनियरिंग कॉलेज भारत में हैं, दुनिया में सबसे अधिक वैज्ञानिक भारत से हैं, दुनिया में जितनी बड़ी वैज्ञानिक खोज होती है उनमें भारतीयों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान रहता है, अमरीका की MIT में 25% से अधिक वैज्ञानिक भारतीय हैं लेकिन फिर भी हमारे देश में नोबल पुरस्कृत लोगों की संख्या बहुत कम है! नोबल पुरस्कार मिलता है (विज्ञान के क्षेत्र में) उन लोगों को जो या तो दुनिया को कोई नयी चीज़ देते हैं या किसी पुरानी अवधारणा का खंडन करते हैं और इन दोनों ही तरह के लोगों को आज का भारत पैदा नहीं कर सकता! कारण? भारत की शिक्षा व्यवस्था! भारत की शिक्षा व्यवस्था कभी भी देशभक्त बनने की प्रेरणा नहीं देती! वह भारत में मानसिक गुलाम पैदा करने के लिए बनाई गई है! कोई भी व्यक्ति किसी भी मौलिक बात पर अनुसन्धान परदेशी भाषा में नहीं कर सकता! यही

बात एक बार उस डच वैज्ञानिक ने भाई राजीव जी से कही थी। आप जिस भाषा में सोचते हैं, केवल उसी भाषा में ही आप मौलिक चिंतन कर सकते हैं तभी आप कोई नया आविष्कार कर पाएँगे या फिर किसी पुरानी धारणा को खंडित कर सकेंगे! क्या आपको आश्चर्य नहीं होता जब आप खबर सुनते हैं कि गाँव के एक लड़के ने हवा से चलने वाला इंजिन बना लिया जबकि हमारे यहाँ हज़ारों वैज्ञानिक पहले से मौजूद हैं?

हमारी शिक्षा व्यवस्था (अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित) डिग्री पर निर्भर है। जिसके पास डिग्री नहीं है लेकिन applied knowledge है, वो अपना गुज़ारा नहीं कर सकता! उसे कहीं नौकरी नहीं मिल सकती! वो और उसका ज्ञान एक दिन इस दुनिया को छोड़ जाएँगे! न जाने ऐसे कितने हुनरमंद लोग रोज़ पैदा होते हैं और रोज़ मर जाते हैं हमारे देश में! भारत के छत्तीसगढ़ राज्य में एक जिला है सरगुजा जो अंबिकापुर तहसील में पड़ता है। यहाँ के सरपंच और कुछ 40-50 लोग भट्टी में इस्पात (Steel) बनाना जानते हैं। एक बार ऐसे ही एक सरपंच को राजीव जी BHU (Banaras Hindu University) ले गए। वहाँ जाकर उन्होंने वैज्ञानिकों और प्रोफेसरों को बताया कि ये लोग कई हज़ार वर्षों से स्टील बना रहे हैं तथा इनसे तकनीक लेकर उस पर और शोध की जानी चाहिए! खयाल अच्छा था लेकिन वैज्ञानिकों और वह सरपंच जिन शब्दों को अपने कार्य में उपयोग करते थे वो बिल्कुल भिन्न थे जिसके बिना तकनीक का आदान प्रदान नहीं हो सकता था! जो स्टील सरगुजा के लोग पारंपरिक तरीके से बनाते थे वह टाटा के स्टील से गुणवत्ता में सिर्फ 19 था जो बहुत अनुसन्धान के बाद बनाया जाता है! फिर वे लोग उस सरपंच को लेकर Vice Chancellor के पास गए ताकि उसे Lecturer नियुक्त किया जा सके लेकिन VC ने कहा कि इसके पास डिग्री नहीं है! इसका मतलब कोई तकनीक जो आपके देश में कई हज़ार सालों से है, जिस पर शोध करके और नए तरीके से उसे विकसित किया जाना चाहिये, जो अब मरने के कगार पर है; आप चाह कर भी उस दिशा में कुछ नहीं कर सकते क्योंकि आपके पास डिग्री नहीं है! इसके बाद वह सरपंच वापिस अपने गाँव, एक रात, बिना किसी को बताये भाग गया और वह करता भी क्या वहाँ रहकर?

ऐसी ही कुछ कहानी है कोयम्बटूर के कुछ गाँवों की जहाँ दुनिया की सबसे उत्कृष्ट dye बनाई जाती है। वहाँ सरकार के लोग गाँव वालों को साक्षरता अभियान के तहत abcd सिखाने पहुँच जाते हैं जिन मूर्खों को यह नहीं मालूम कि ये लोग पिछले कई हज़ारों सालों से हाई टेक काम करते आ रहे हैं! यह abcd सीखकर उनका कुछ नहीं होने वाला! क्या आपको पता है कि Indian Forest Act नाम के एक कानून की वजह से आदिवासी भूसंपदाओं का उपयोग नहीं कर सकते? वे हज़ारों सालों से इन खनिजों और प्राकृतिक उपहारों से अपने उद्योगों को चलाते आ रहे हैं तथा भारत को संपन्न बनाते आए हैं परंतु आज इन नीतियों की वजह से उनका वह ज्ञान मर रहा है! हमारे आदिवासी भाई बहन आज भी न जाने कितने ज्ञान के भंडार को लेकर हैं जिन पर बहुत शोध की जा सकती है और देश को फिर से सोने की चिड़िया बनाया जा सकता है परंतु सरकार इन भूसंपदाओं का सौदा विदेशी कंपनियों के साथ करके देश को बेच डालती है! सरगुजा और गोवा में लौह खनिज का भंडार है लेकिन हर साल जापान की एक कंपनी चार जहाज भरकर लोहा यहाँ से ले जाती है और फिर उसका स्टील अपने देश में बनाती है! इस भूसंपदाओं पर जिनका सबसे पहला अधिकार है उन्हें वंचित करके नक्सलवादी बना दिया जाता है! इसी आग में आज का देश जल रहा है, सिर्फ और सिर्फ सरकार की गलत नीतियों के कारण!

यह भारत का परम दुर्भाग्य है कि भारत की सच्ची तस्वीर की जानकारी हमारे अपने देश में न होकर ब्रिटेन के इंडिया हाउस में उपलब्ध है! वहाँ आपको वह तमाम जानकारी मिल जाएगी कि अंग्रेज़ों ने किस भारत को देखा था! ऐसे ही एक अंग्रेज़ अधिकारी, जिसका नाम विलियम एडम्स था, ने अपने व्याख्यान में कहा था कि भारत तकनीकी रूप से बहुत विकसित देश है और उस जैसा विकसित देश आपको पूरी दुनिया में नहीं मिल सकता! उसने यह भी कहा कि पूरी दुनिया में भारत के निर्यात का योगदान 33% से ज्यादा है (वर्तमान में चीन का योगदान सबसे अधिक है, 26%)! अगर यहाँ निर्यात इतना था तो उद्योग भी होंगे और बिना तकनीक के उद्योग स्थापित हो नहीं सकते लेकिन

यह हमारा दुर्भाग्य है उस जमाने की तकनीक आज हम access नहीं कर पा रहे हैं!

सन 1926 में John Logie Baird नाम के एक फ्रांसिसी वैज्ञानिक ने टीवी का आविष्कार किया। उसने कहा था कि धातु से electron emission का सिद्धांत उसने चीन से सीखा लेकिन चीन ने उसे भारत से सीखा क्योंकि भारत में सातवीं शताब्दी से पहले के प्रमाण मौजूद हैं! उसका कहना था कि उसने इस मशीन का आविष्कार फ्रांस की सरकार के कहने पर किया क्योंकि वहाँ की सरकार एक ऐसी मशीन चाहती थी जिसके आगे बैठने से मनुष्य के दिमाग में विचार आने बंद हो जाएँ और उसके दिमाग की क्रियाशीलता और विचारशीलता क्षीण हो जाए जिससे वे वही करेंगे जो उनसे कहा जाएगा! अर्थात् वे मानसिक गुलाम हो जाएँगे। प्रश्न यह है कि भारत को जब इस सिद्धांत का पता था तो उसने टीवी का आविष्कार सातवीं शताब्दी में क्यों नहीं कर लिया था? इसी तरह भारत में हजारों सालों से आतिशबाजी होती आई है और उसी फोर्मुले से बम भी बनाया जा सकता है परंतु फिर भी भारत ने कोई बम नहीं बनाया उस फोर्मुले से! वहीं यूरोप और अमरीका में यह सिद्धांत भारत से गया और उन्होंने छूटते के साथ बम बनाने शुरू कर दिए! आज भी उनकी अर्थव्यवस्था और वैज्ञानिक अनुसंधानों का बड़ा हिस्सा इसी सेक्टर में लगता है। क्यों? कारण यह है विज्ञान के सिद्धांत पूरे संसार के लिए एक ही होते हैं परंतु तकनीक पर्यावरण के अनुसार बदल जाती है! भारत की संस्कृति जियो और जीने दो पर आधारित है इसीलिए यहाँ अनगिनत वर्षों से इतनी अलग सभ्यताओं के बावजूद कभी बम बनाने की जरूरत महसूस नहीं हुई! वहीं यूरोप के छोटे छोटे देश आपस में कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ते आए हैं सिर्फ दौलत और हुकूमत के लिए जिसके कारण उन्हें विध्वंसक आविष्कारों की जरूरत पड़ी! यही वजह है कि पूरे यूरोप का इतिहास यदि आप देखें तो वहाँ कोई भी सभ्यता लगातार हजार वर्षों तक सांस नहीं ले पायी! जो नयी सभ्यता आई, वह बिल्कुल भिन्न विचारधारा के साथ आई और उसने पहली सभ्यता की नृशंस हत्या की फिर चाहे वह normadi, roman, greek आदि कोई भी सभ्यता हो! इसीलिए टीवी का आविष्कार किया गया ताकि लोग विचारहीन हो जाएँ और उनमें स्वाभिमान

खत्म हो जाए ताकि वे गुलाम बन सकें। आप चाहें तो अपने आस पास देख सकते हैं कि जो लोग अधिक टीवी देखते हैं वे अधिक सोच नहीं पाते और अगर आप उनसे कोई सकारात्मक बात करेंगे तो वे उठ कर वहाँ से चले जाएँगे। इस बीमारी से सबसे अधिक पीड़ित हैं आज की हमारी शहरी माताएँ-बहनें और युवावर्ग!

देश हमेशा वही तरक्की करता है जो अपने राष्ट्रीय पर्यावरण के अनुसार तकनीक का आविष्कार करता है। यूरोप और अमरीका के कई देशों में भयंकर ठण्ड पड़ती है। -4 से 30 डिग्री के मध्य ही खाना खाने लायक रहता है लेकिन इन देशों में -19 डिग्री तक पारा पहुँच जाता है! इसीलिए इन देशों ने फ्रिज का आविष्कार किया। लेकिन इस फ्रिज से पर्यावरण और स्वास्थ्य पर पड़नेवाले दुष्प्रभावों के कारण फ्रिज को भारत की ओर रवाना कर दिया ताकि खड़ा हुआ माल बिक सके! जब फ्रिज भारत में आ गया तो हम बासा खाना खाने के आदि हो गए, प्लास्टिक की बोतलों में पानी पीने, बचे हुए आटे की रोटी खाने के आदी हो गए जहाँ कभी बचे हुए आटे को या तो किसी अन्य उपयोग में लाया जाता था या जानवरों के लिए रोटी बना दी जाती थी। तकनीक होती है जीवन को सुधारने के लिए न कि जीवन की गुणवत्ता को बिगाड़ने के लिए! यदि हम अपनी पारंपरिक तकनीक को अपनी जरूरतों के हिसाब से विकसित कर पाते अपने परिप्रेक्ष्य में तो आज हम कहाँ के कहाँ होते!

आज विदेशी आर्थिक सहायता के नाम पर भारत से वैज्ञानिकों और इंजिनियर की फ़ौज भारत से पलायन कर रही है। भारत का शिक्षा तंत्र पूरी तरह से पराधीन हो चुका है जो देश बेचने वालों के अलावा और कुछ भी पैदा नहीं कर रहा! भारत का पारंपरिक ज्ञान और विज्ञान जंगलों में अपना दम तोड़ रहा है और कोई पूछने वाला नहीं है! इन सभी के पीछे जिम्मेदार है सरकार की या कहें कांग्रेस की गलत नीतियाँ जिसे इस देश में सबसे अधिक समय तक शासन करने का अवसर प्राप्त हुआ और जिसने सबसे अधिक कानूनों में शोधन करवाए ताकि विदेशी भारतीय संसाधनों का पूरा लाभ उठा सकें! मित्रों, वैसे तो देश की लगभग हर पार्टी चोर है लेकिन पहले पकड़ा वो जाना चाहिए जिसकी



आइ में सब लुटेरे सिर छुपा के बैठे हों! भारत स्वाभिमान आन्दोलन उस  
वैचारिक क्रांति का नाम है जो इस देश से कांग्रेस रूपी कैंसर को खत्म करके  
एक ऐसा सुशासन देश में लाने के लिए वचनबद्ध है जिससे कांग्रेस के विनाश से  
बाकी सब छिट पुट पार्टियों के छोटे लुटेरे भी अपने आप सीधे हो जाएँ! जब  
संसद में सारे अच्छे लोग होंगे तो बुरों को यहाँ से भागना ही पड़ेगा!

“जब अन्याय ही कानून बन जाए तो विरोध कर्तव्य बन जाता है!”

- श्रद्धेय भाई राजीव दीक्षित जी

इन्कलाब जिंदाबाद!

जय भारत!